H.W
24.6.21

नाम - पूजा नाथ
कक्षा - 6
विभाग - 'दा' स्कूल नं - ४८८६

Date
Page

प्र- हंस और कछुआ की कहानी मेरी भाषा में।

उ- हंस और कछुआ

मगध देश में फुल्लोत्पल नामक एक तालाब में संकट और विकट नाम के दो हंस रहते थे। वहाँ एक कछुआ भी रहता था, जो उनका मित्र था। उस तालाब में बहुत सारी मछलियाँ भी रहती थी। एक दिन कुछ मछुआरे वहाँ से गुजर रहे थे और तब उनकी नजर तालाब में तैरती हुई मछलियों और कछुए पर पड़ी। उन्होंने आपस में विचार करके यह तय किया कि वे अगले दिन आकर उस तालाब की सारी मछलियों और कछुए को पकड़ेंगे। यह बात दोनो हंसो ने सुन लिया था और उन्होंने यह बात सारी मछलियों और कछुए को बता दि। यह बात सुनकर कछुआ घबरा गया और अपने बचाव का उपाय सोचने लगा। कछुए को उड़ना नहीं आता था। हंसों ने एक योजना बनाई कि वे एक लकड़ी के दो सिरों को अपनी चोंच में दबा लेंगे और कछुआ लकड़ी को मुँह से बीच में पकड लेगा। हंसो ने उसे बोलने के लिए मना किया था और वे उड़ चले। जब वे एक गाँव के ऊपर से उड़ रहे थे तो पतंग उड़ाते बच्चों ने उन्हे देख लिया। वे उनके पिछे-पिछे भागने लगे। एक बच्च बोला - "देखो! कैसा अद्भुत दृश्य है।" दूसरा बच्चा बोला - "अगर यह कछुआ गिर पड़, तो मैं इसे अपने घर ले जाऊँगा।" तीसरा बच्चा बोला - "मैं तो इसे पकाकर खाऊँगा।" बच्चों की बाते सुनकर कछुए

को गुस्सा आगया। कछुए से रहा नहीं गया और गुस्से में आकर बोला- "तुम क्या मुझे खाक पकड़ोगे!" जैसे ही वह बोलने के लिए अपना मुँह खोला, वैसे ही नीचे गिरा और मर गया।

सीख - (i) हमेशा सोच-विचार कर के कार्य करना चाहिए नहीं तो कछुए जैसा हाल होगा।
(ii) बुद्धिमान भी अगर अपनी चंचलता पर काबू नहीं रख पाता है तो परिणाम काफी बुरा होता है।
(iii) हमें उचित समय पर ही बोलना चाहिए।
(iv) विपरीत परिस्थिति में भी धैर्य से काम लेना चाहिए।